*DR Krishnadeo kumar bharti*
*Assistant professor (G.T)*
*Dept of Political science*
*C.M.j College Donwarihat*
*Khutauna, Madhubani.*
*Email----Kdkbharti08@gmail.com*
*B.A Part-3--- Date----27-05-2020*

अरस्तू के दासता के विचार पर प्रकाश डालें।
*Discuss Aristotle's views on Slavery.*

परिवार के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण नितान्त प्रश्न जिस पर अरस्तू ने विचार किया है वह दास प्रथा का स्वरूप तथा उसका औचित्य है।दास प्रथा का समर्थन *Plato* ने नहीं किया था क्योंकि उसे रुढ़िवादिता में विश्वास नहीं था जबकि अरस्तू को रुढ़िवादिता व परम्परा में बहुत आस्था था।और यही कारण है कि इस दास प्रथा जैसी विचारधारा को भी यूनानी जीवन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता होने के कारण अपने समर्थन का एक छाप छोड़ना पड़ा जो अरस्तू के राजनीतिक दर्शन के लिए एक विरोधाभास और कलंक साबित हुआ।

अरस्तू का कहना है कि जिस प्रकार मनुष्य सम्पत्ति रखता है, उसी प्रकार वह दास भी रखता है।उसके अनुसार सम्पत्ति दो प्रकार की होती है---

1. निर्जीव
2. सजीव

जहाँ निर्जीव सम्पत्ति में मकान, खेत और अन्य चल सम्पत्ति आती है, वहीं हाथी धोड़ा, अन्य पशु और दास भी शामिल है।

अरस्तू दासता को एक पारिवारिक सम्पत्ति मानता है। उसकी दृष्टि में परिवार के लिए दास अधिक आवश्यक है, क्योंकि वह एक सजीव सम्पत्ति है।अरस्तू निर्जीव सम्पत्ति से ज्यादा महत्व सजीव सम्पत्ति अर्थात दास को देता है, क्योंकि निर्जीव उपकरण से तभी काम लिया जा सकता है जबकि उसके पहले सजीव उपकरण हो।

अरस्तू दास प्रथा के औचित्य को निम्न तर्कों के आधार पर सही सिद्ध करता है---

1. दास प्रथा एक स्वाभाविक व्यवस्था है--

अरस्तू दास प्रथा को प्राकृतिक मानते हैं। उनका कहना है कि प्रकृति में सर्वत्र ही यह नियम दृष्टिगोचर होता है कि उत्कृष्ट निकृष्ट पर शासन करता है। मनुष्यों में स्वाभाविक रूप से असमानता होती है।सभ्य मनुष्य एक सी बुद्धि योग्यता अथवा कौशल लेकर उत्पन्न नहीं होते।कुछ व्यक्ति श्रेष्ठतम परिस्थितियों में भी मूर्ख और अकुशल रहते है।दासता इसी प्राकृतिक असमानता का परिणाम है।

2. दासता स्वामी के लिए उपयोगी है और दास के लिए भी---

अरस्तू दास प्रथा को इस दृष्टि से भी न्यायोचित ठहराता है कि यह न केवल स्वामी के लिए अपितु दास के लिए भी उपयोगी और लाभकारी है।बुद्धिमान और विवेकी स्वामीयों को राज-कार्य एवं अन्य गुरुतर कार्य चलाने के लिए तथा अपने बौद्धिक और नैतिक गुणों के विकास के लिए समय और विश्राम की आवश्यकता होती है।जिस प्रकार एक संगीतज्ञ संगीत यंत्रों के अभाव में उत्तम संगीत की निष्पत्ति नहीं कर सकता, उसी प्रकार एक गृहस्थ अर्थात, स्वामी दासों के बिना सुखी और सुसंस्कृत जीवन यापन नहीं कर सकता।इस प्रकार स्वामी के दृष्टिकोण से दासता उचित है।

दासों के प्रकार*( Kinds of Slavery)*

अरस्तू दास प्रथा पर विचार करते हुए दासता के दो प्रकार है--

1.स्वाभाविक दासता और
2. वैधानिक दासता

जो व्यक्ति जन्म से ही मन्द बुद्धि, अकुशल एवं अयोग्य होते है वे स्वाभाविक दासता के अन्तर्गत आते हैं। इसके लिए अतिरिक्त युद्ध में अन्य राज्य को पराजित कर लाए हुए बन्दी भी दास बनाये जा सकते है।युद्ध बंदियों की इस प्रकार की दासता वैधानिक दासता कहलाती है।किन्तु इस प्रकार की दासता को अरस्तू यूनानवासियो पर लागू नहीं करता, क्योंकि यूनानवासी दास बनने के लिए नहीं स्वामी बनने के लिए जन्म लिया है।

दासों के प्रति मानवीय व्यवहार---

1.स्वामी को दास के प्रति किसी प्रकार का अत्याचार क्रूर व्यवहार नहीं करना चाहिए।
2.दासों की संख्या बढ़ाने के बजाय आवश्यकतनुसार सीमित किया जाना चाहिए।
3.स्वामी को अपने दासों को यह वचन देना चाहिए कि यदि वे अच्छा कार्य करेंगे तो उन्हें छोड़ दिया जायेगा।
4.स्वामी और दास के मध्य मधुर सम्बन्ध होना चाहिए।
5.स्वामी को चाहिए कि दास के पुत्र यदि योग्य और बुद्धिमान हैं तो उसे दास नहीं बनाये, क्योंकि दासता वंशानुगत नहीं होता।

आलोचनाएँ----

1.अरस्तू द्वारा समाज के व्यक्तियों को दासों और स्वामीयों में बाँटा जाना मानव समुदाय के प्रति अन्याय है।
2.दासों में शारिरीक और स्वामी में मानसिक गुण होता है, यह व्यावहारिक प्रतीत नहीं होता।दोनों गुण किसी में साथ-साथ भी हो सकता है।
3. दास जन्म से ही बौद्धिक और नैतिक गुणों से शून्य हैं,यह कैसे जाँचा जा सकता है।

आगे, धन्यवाद।

2020-05-27
From vivo Notes

Scanned with CamScanner